

**दुआ-33**

दुआए इस्तेखारह

बिस्मिल्लाहिर रहमानिर रहीम

बारे इलाहा! मैं तेरे इल्म के जरिये तुझसे खैर व बहबूद चाहता हूँ। तू मोहम्मद (स0) और उनकी आल (अ0) पर रहमत नाज़िल फ़रमा और मेरे लिये अच्छाई का फैसला सादर फ़रमा, और हमारे दिल में अपने फैसले (की हिकमत व मसलेहत) का अलका कर और उसे एक ज़रिया करार दे के हम तेरे फैसले पर राज़ी रहें और तेरे हुक्म के आगे सरे तस्लीम खम करें, इस तरह हमसे शक की खलिश दूर कर दे और मुखलेसीन का यकीन हमारे अन्दर पैदा करके हमें तकवीयत दे और हमें खुद हमारे हवाले न कर दे के जो तूने फैसला किया है उसकी मग़फ़ेरत से आजिज़ रहें और तेरी कुदरत व मन्ज़िलत को सुबुक समझें और जिस चीज़ से तेरी रज़ा वाबस्ता है उसे नापसन्द करें और जो चीज़ अन्जाम की खूबी से दूर और आफ़ियत की ज़द से करीब हो उसकी तरफ़ माएल हो जाएं। तेरे जिस फैसले को हम नापसन्द करें वह हमारी नज़रों में पसन्दीदा बना दे और जिसे हम दुश्वार समझें उसे हमारे लिये सहल व आसान कर दे और जिस मशीयत व इरादे को हमसे मुताल्लुक किया है उसकी इताअत हमारे दिल में अलका कर। यहां तक के जिस चीज़ में तूने ताजील की है उसमें ताख़ीर और जिसमें ताख़ीर की है उसमें ताजील न चाहें और जिसे तूने पसन्द किया है उसे नापसन्द और जिसे नागवार समझा है उसे इख़तेयार न करें। और हमारे कामों का उस चीज़ पर खातेमा कर जो अन्जाम के लेहाज़ से पसन्दीदा और मआल के एतबार से बेहतर हो। इसलिये के तू नफ़ीस व पाकीज़ा चीज़ें अता करता और बड़ी नेमते बख़्शता है और जो चाहता है वही करता है और तू हर चीज़ पर कुदरत रखता है।